# डॉ. मिथिलेश दीक्षित और उनका रचना

हाइकुकार , क्षणिकाकार , लघुकथाकार डॉ. मिथिलेश दीक्षित किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं । लगभग पॉंच दशक से अधिक समय से सतत् सृजनशील डॉ. दीक्षित अब तक विविध विषयों पर अनेक हाइकु , क्षणिकायें और लघुकथायें लिख चुकी हैं । आपके विविध विधाओं के अनेक संकलन पाठकों के समक्ष आ चुके हैं ; जो पाठकों के बीच बहुत ही चर्चित और बहुप्रशंसित हुये हैं । हाइकु हो या क्षणिकायें उनमें गहन भाव अनुभूति के दर्शन होते हैं । सतही - सी लगने वाली आपकी इन रचनाओं में अभिधा और लक्षणा के माध्यम से आप जो बात गहराई से कह जाती हैं वह निश्चित ही आपकी रचनाशीलता की पहचान है -चार पाये से/ दो पाया है । / इतना ही/ हो पाया है ।

जैसे - जैसे हम इनकी रचनाओं को पढ़ते हैं , इनकी सृजनशीलता के बहुआयाम खुलते जाते हैं । विषय की गहराई में जाकर उन्हें शब्दों का इस प्रकार से जामा पहनाना कि पढ़ने में साधारण - सा लगने वाला हाइकु भी पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ उन्हें चमत्कृत कर जाता है । जो आपके सृजन की सफलता ही कही जा सकती है । कम से कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कह जाना और वह भी हाइकु या क्षणिका जैसी विधा में , सिर्फ़ एक सिद्ध हस्त रचनाकार के वश की ही बात हो सकती है ।

हाइकु और क्षणिका साहित्य की वो विधा है जिसमें शब्दों की सीमा पूर्व निर्धारित होती है। उसमें शब्दों के विस्तार की गुंजाइश बिल्कुल नहीं होती है । आपको उन्हीं शब्दों में अपनी बात पाठकों तक पहुॅंचाना होती है , जो आपके पठन - पाठन और निरंतर अभ्यास से ही वह कुशलता आपमें आती है , जब आप अपनी बात बड़ी आसानी से उन्हीं शब्द - सीमा में कह जाते हैं और यह आपके काव्य - कौशल्य और भाव निपुणता की सूचक है ?

वर्तमान में व्याप्त सामाजिक , आर्थिक , राजनैतिक , धार्मिक , पारिवारिक विसंगतियों , विद्रूपताओं और बदलाव की गहराइयों में जाकर उनके परिणामों और प्रभावों पर बड़ी ही ईमानदारी से क़लम चलाना आपके सृजन की ख़ासियत है । संचार क्रांति से लेकर वर्तमान की ए - आई. क्रांति के पड़ने वाले सामाजिक , पारिवारिक , आर्थिक और राजनीतिक दुष्प्रभावों से चिंतित हो, आपने इन पर खुलकर ख़ूब लिखा है । शायद ही कोई ऐसा विषय हो जो आपसे अछूता रहा हो । और उन्हीं विषयों को आपने अपने लेखन का मुख्य विषय बनाया है -**संतों के पास नहीं / कोठी - मकान । / फ़िर भी निराली है / इन - बान - शान । या - बोलबाला कागों का / हो गया सफाया आज / हरे - भरे बाग़ों का ।**

क्षणिकाओं में आपने वर्तमान व्यवस्था पर करारा तमाचा जड़ा है - **मिला बेईमानों को / भीड़ का सहारा / ईमान हारा ।**

उजड़ते - कटते जंगलों की ओर इशारा कर आप बड़ी गहराई से अपनी चिंता , अपनी व्यथा व्यक्त कर जाती हैं -' **देखकर कुल्हाड़ी / और क़ातिल की ऑंखें / पेड़ों की डरकर / सहम गयीं शाखें ।**

घरों में रिश्तों के बीच खिंचती दीवारों से असहज हो आप लिखतीं हैं - **' गिरा डाली रिश्तों ने / कच्ची दीवार / दिखने लगा है साफ़ / और आर - पार ।**

वृक्षारोपण की महत्ता पर आप प्रकाश डालती हुई लिखती हैं -**' मेरा रोपा हुआ पौधा है / मुझे न सही / कल औरों को / छॉंह देगा ।**

पारिवारिक विघटन पर आप लिखती हैं - **ज़िंदगी भर - खप गयी / बस / एक घरौंदे के लिए ।**

अहसानफ़रामोशी से व्यथित हो आप लिखती हैं - **जिसके बल पर बड़े हो गये / उसके सिर पर खड़े हो गये ।**

वसंत की इस क्षणिका में आपकी चिंता विचारणीय है - **उल्लू माली बन गये जब / बाज़ भी गाने लगे / मीठे तराने कोयलों के ।**

जीवन के यथार्थ को कम से कम शब्दों में कह जाना आपके सृजन को एक ऊॅंचाई पर पहुॅंचा देता है - **किसकी हुई / वक़्त की सुई ।**

ये तो आपके सृजन के चंद उदाहरण हैं । आपके संकलनों को पढ़ने के बाद लगता है कि आपके द्वारा हाइकु या क्षणिका विधा को अपने सृजन का मुख्य आधार बनाना , आपके काव्य - कौशल्य , भाव निपुणता और शिल्प - सौन्दर्य का गुॅंथा हुआ वो गुलदस्ता है, जिसकी महक पाठकों को सुवासित किये बिना नहीं छोड़ती । आप सदा ही अपने लेखन में सपाट बयानी से बचती आयीं हैं । विषय की गहराइयों में जाकर वहॉं से मोती चुन - चुनकर लाना और फ़िर उन्हें भावों का जामा पहनाकर अपने शिल्प - सौन्दर्य में ढालना आपके लेखन की मुख्य विशेषता है ।

मुझे आपको पढ़ने का , आपके साथ सृजन साझा करने का और आपके संपादन में छपने का प्रारंभ से ही सौभाग्य प्राप्त होता आया है । इस दौरान मैंने अनुभव किया है कि आपके सृजन ने न तो कभी बाह्य और न कभी आंतरिक समझौता किया है । आपने जो भी लिखा है , अपनी शर्तों पर पूर्ण आज़ादी से लिखा है । दवाब में आकर लिखना आपके स्वभाव में नहीं है । स्वाभिमान आपके अंदर कूट - कूटकर भरा हुआ है जो आपके लेखन में भी स्पष्ट झलकता है - **दिल की गहराई की / थाह नाप आये हम / तब कहीं जाकर/ मोती निकाल पाये हम ।**

आपकी यह साहित्य सृजन यात्रा सतत् अविराम गति से चलती हुई नित्य नये पड़ाव हासिल करें । आप हाइकु , क्षणिकाओं और लघुकथाओं का भंडार सदैव भरती रहें । इसी शुभेच्छा के साथ - **मन हुआ विचलित / किसी अन्याय से जब / सीपियों से भर दिया / पूरा समन्दर तब ।**



**अशोक आनन**
जूना बाज़ार , मक्सी जिला - शाजापुर ( म.प्र.)
पिनकोड - 465106 M.N. - 9977644232

## बड़ाबाजार में पहले प्राइवेट हेरिटेज सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के तौर पर

# चारनोक लोहिया हॉस्पिटल का हुआ भव्य उद्धाटन

**कोलकाता, 26 फरवरी, 2026: चारनोक हॉस्पिटल ने सेंट्रल कोलकाता में पश्चिम बंगाल के पहले प्राइवेट हेरिटेज सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, चारनोक लोहिया हॉस्पिटल का उद्घाटन किया। अत्याधुनिक उपकरणों के साथ खुले इस अस्पताल ने बंगाल के हेल्थकेयर लैंडस्केप में एक ऐतिहासिक उपस्थिति दर्ज की है।**

250 बेडों की क्षमता वाले इस मल्टी सुपर स्पेशियलिटी फैसिलिटी अस्पताल ने लगभग 200 साल पुरानी ग्रेड ढ्ढ हेरिटेज बिल्डिंग, जिसे पहले लोहिया मातृ सेवा सदन के नाम से जाना जाता था, इस अस्पताल में नई जान फूंक दी है, जिसमें संरक्षित लेगेसी आर्किटेक्चर को कटिंग-एज मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ नये तरीके से जोड़ा गया है।

चारनोक लोहिया हॉस्पिटल के उद्घाटन मौके पर सम्मानीय अतिथियों में फिरहाद बॉबी हकीम (कोलकाता के माननीय मेयर), शशि पांजा (माननीय एमआइसी, इंडस्ट्री, कॉमर्स और एंटरप्राइज महिला एवं बाल विकास और समाज कल्याण, पश्चिम बंगाल सरकार), चंद्रिमा भट्टाचार्य (माननीय एमआईसी, वित्त, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, भूमि एवं भूमि सुधार, शरणार्थी एवं पुनर्वास, पश्चिम बंगाल सरकार), सुजीत बोस (अग्निशमन राज्य मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार), दोला सेन (संसद सदस्य), विवेक गुप्ता (विधायक), देबोप्रसाद बाग (विधायक), राजेश कुमार सिन्हा (पार्षद), एलोरा साहा (पार्षद), तारक नाथ चट्टोपाध्याय (पार्षद), मृणाल साहा (पूर्व पार्षद), स्मिता बख्शी (पूर्व विधायक), संजय बख्शी (पूर्व विधायक), प्रशांत शर्मा (चारनोक हॉस्पिटल के प्रबंध निदेशक) के साथ समाज की कई दूसरी जानी-मानी हस्तियां इसमें शामिल हुए।

लगभग 4 बीघे ज़मीन पर फैले, चारनोक लोहिया हॉस्पिटल की एक-एक अत्याधुनिक व्यवस्थाएं एवं यहां की मशीनों का रेस्टोरेशन मरीजों की हितों के अनुसार है। जिसने ग्रेड I स्ट्रक्चर की आर्किटेक्चरल शान और हेरिटेज कैरेक्टर को बनाए रखा है, साथ ही इसे मॉडर्न सुपर स्पेशियलिटी हेल्थकेयर से जुड़ी सभी सुविधाओं से लैस रखा गया है। इस अस्पताल के आधुनिकीकरण में 250 करोड़ रुपये से ज़्यादा की लागत आई है। यह अस्पताल मरीजों की सुविधा एवं उन्हें स्वस्थ व शेहदमंद रखने के लिए एक ऐतिहासिक प्रॉपर्टी के अडैप्टिव रीयूज़ का एक अनोखा और मिसाल है। इस अस्पताल से लगभग 1,000 से अधिक लोगों को रोजगार मिलने की संभावना है, जो लोकल इकॉनमी में बड़ा योगदान देगा।

गिरीश पार्क मेट्रो स्टेशन से 500 मीटर की दूरी पर मौजूद इस अस्पताल के खुलने से बड़ाबाजार, जोरासांको, नीमतला घाट स्ट्रीट और विवेकानंद रोड में रहने वाले लोगों को काफी ज्यादा फायदा होगा। इसके अलावा यहां पहुंचने के और भी कई एक्सेस पॉइंट हैं, अस्पताल में बड़ी पार्किंग की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

चारनोक लोहिया हॉस्पिटल में वर्ल्ड-क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर की सुविधाएं है, जिसे पूरी टर्शियरी और क्रिटिकल केयर सर्विस देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। 250 बेडों की क्षमता वाले इस अस्पताल में 90 से ज़्यादा वार्ड बेड और 20 प्राइवेट केबिन हैं, जिन्हें कई क्रिटिकल केयर स्पेशलिटीज़ में 70 आइसीयू बेड की सुविधा भी मिलेगी। हॉस्पिटल में 4-6 स्टेट-ऑफ़-द-आर्ट मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर, डेडिकेटेड कैथ लैब, सीटीवीएस और न्यूरो ऑपरेशन थिएटर, 10 बेड का इमरजेंसी डिपार्टमेंट और 10 बेड की डायलिसिस यूनिट भी उपलब्ध हैं। इसके साथ यहां एडवांस्ड डायग्नोस्टिक और इमेजिंग सुविधाएँ भी मिलेंगी। इस अस्पताल में एक ही छत के नीचे आसान, टेक्नोलॉजी से चलने वाली देखभाल से जुड़ी कई सुविधाएं मिलेगी।



मीडिया से बात करते हुए चारनोक हॉस्पिटल के प्रबंध निदेशक प्रशांत शर्मा ने कहा, पूरे बंगाल में काफी ज़्यादा पोटेंशियल वाली कई हिस्टोरिक प्रॉपर्टीज़ का इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। चार्नॉक लोहिया हॉस्पिटल के ज़रिए, हमने दिखाया है कि हेरिटेज कंज़र्वेशन और मॉडर्न हेल्थकेयर एक साथ आसानी से चल सकते हैं। सेंट्रल कोलकाता में खासकर बड़ाबाज़ार और उसके आस-पास के इलाके लंबे समय से एक वाइब्रेंट कमर्शियल हब रहे हैं, लेकिन पाँच किलोमीटर के दायरे में एक मॉडर्न प्राइवेट सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल तक यहां उपलब्ध नहीं थी। चार्नॉक लोहिया हॉस्पिटल की लॉन्चिंग के साथ हम इय इलाके की ज़रूरी कमी को पूरा कर रहे हैं। आपातकालीन स्थिति में किसी मरीज को एडवांस्ड केयर समय मिलने से मरीज की जान बच सकती है। हमारा विज़न वर्ल्ड-क्लास हेल्थकेयर को लोगों के रहने और काम करने की जगह के करीब लाना है, जो हमारी पेशेंट फर्स्ट की फिलॉसफी के मुताबिक है।

चारनोक लोहिया हॉस्पिटल के बारे में: चारनोक लोहिया हॉस्पिटल हेरिटेज और हेल्थकेयर के बीच एक अनोखे मेल का उदाहरण है। 200 साल पुरानी यह शानदार बनावट ग्रीक और रोमन ऑर्डर को फॉलो करने वाले नियोक्लासिकल आर्किटेक्चरल मिक्स को दिखाती है। यह एक ग्रेड-ढ्ढ हेरिटेज प्रॉपर्टी है, जिसका एक रिच हिस्ट्री है। यह पहले चैरिटेबल लोहिया मातृ सेवा सदन, एक मदर एंड चाइल्ड हॉस्पिटल के तौर पर चलाया गया। चारनोक हॉस्पिटल ने इस हेरिटेज बिल्डिंग को ठीक किया है, रेनोवेट किया है और इसे 250 बेड वाले एनएबीएच कंप्लाएंट स्टेट-ऑफ-द-आर्ट सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में बदल दिया है, जिसमें 80 आइसीयू बेड, मॉड्यूलर ओटी, कैथ लैब और एडवांस्ड इमेजिंग हैं। चारनोक लोहिया हॉस्पिटल ने एडवांस्ड टेक्नोलॉजी लगाते हुए इस भवन के बाहरी हिस्से को पुराने एतिहासिक धरोहर के रूप में बनाए रखकर गहरी इमोशनल और हिस्टोरिकल वैल्यू पर ज़ोर दिया है। हाई-एंड टर्शियरी केयर ट्रीटमेंट पर साफ फोकस के साथ, यह हॉस्पिटल नॉर्थ कोलकाता और आस-पास के इलाकों में रहने वाले पूरी आबादी को घरेलू परिवेश के साथ अत्याधुनिक सर्विस देगा।

# कोटक महिंद्रा बैंक ने बताया: 'स्मार्ट अर्नर्स' के बीच बढ़ा 'पर्पस-लेड' कर्ज लेने का रुझान

kotak
Kotak Mahindra Bank

**अब केवल आपात स्थिति में कर्ज लेने की सोच बदल रही है। अनुशासित निवेशक पर्सनल लोन का इस्तेमाल रणनीतिक तरीके से कर रहे हैं, ताकि वे अपने लंबे समय के निवेश और संपत्ति निर्माण को सुरक्षित रखते हुए जीवन के जरूरी लक्ष्यों को पूरा कर सकें।**

मुंबई: कोटक महिंद्रा बैंक ने शहरी भारत में पर्सनल लोन के रुझानों में एक बड़ा बदलाव देखा है। अब आर्थिक रूप से अनुशासित और अच्छी आय वाले (वेतनभोगी) ग्राहक मजबूरी या संकट के बजाय एक रणनीतिक फैसले के तहत लोन को चुन रहे हैं।

पर्सनल लोन अब अपनी पुरानी 'सिर्फ इमरजेंसी' वाली छवि से बाहर निकल रहे हैं। कोविड के बाद, कई ग्राहकों ने निवेश की अपनी परिभाषा को बड़ा किया है। वे अब वित्तीय बढ़त के साथ-साथ अच्छी सेहत, वेलनेस, नए अनुभवों और जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों को भी निवेश जितना ही ज़रूरी मान रहे हैं। अपने लंबी अवधि के निवेश को बीच में भुनाने और 'कम्पाउन्डिंग' (ब्याज पर ब्याज) के फायदे को रोकने के बजाय, ग्राहक अब वेलनेस, पढ़ाई, यात्रा, घर को अपग्रेड करने और पारिवारिक कार्यक्रमों के लिए तय ईएमआई का रास्ता चुन रहे हैं।

लोन लेने के तरीके उनकी व्यावहारिक ज़रूरतों को भी दिखाते हैं, जैसे कि पुराने छोटे-मोटे कर्जों को एक साथ समेटना, वाहन खरीदने के लिए पैसों की कमी को पूरा करना और अनुशासित तरीके से किश्तें चुकाकर अपना 'क्रेडिट प्रोफाइल' मज़बूत करना। कई लोगों के लिए पर्सनल लोन एक 'बैलेंस्ड अप्रोच' बन रहा है—इससे वे अपनी आज की ज़रूरतें भी पूरी कर लेते हैं और साथ ही अपनी एसआईपी, शेयर पोर्टफोलियो और रिटायरमेंट प्लान को भी बिना रोके जारी रख पाते हैं। ग्राहकों का भरोसा बढ़ने की मुख्य वजह पारदर्शिता, जल्दी लोन मिलना, आसान ईएमआई स्ट्रक्चर और बिना किसी रुकावट वाली डिजिटल प्रक्रिया है।

अमित पाठक, बिजनेस हेड - पर्सनल लोन, कोटक महिंद्रा बैंक ने कहा, 'हम विश्वास से भरा एक बदलाव देख रहे हैं: मज़बूत आय और अनुशासित निवेश की आदत वाले ग्राहक अब अपने पोर्टफोलियो को बेचे बिना अपने ज़रूरी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए पर्सनल लोन का इस्तेमाल कर रहे हैं। वे मजबूरी में उधार नहीं ले रहे, बल्कि इसलिए ले रहे हैं ताकि उनकी मेहनत से की गई बचत और निवेश में कोई रुकावट न आए। पर्सनल लोन उन्हें अपनी भविष्य की वित्तीय योजनाओं से समझौता किए बिना आज की ज़िंदगी को पूरी तरह जीने का मौका देता है।

यह उभरती हुई सोच बढ़ती वित्तीय समझदारी को दिखाती है—जहाँ क्रेडिट (कर्ज) को अब महज़ एक बोझ नहीं, बल्कि आज के जीवन स्तर को बेहतर बनाने और भविष्य की संपत्ति के निर्माण को संतुलित रखने के एक 'रणनीतिक औज़ार' के रूप में देखा जा रहा है।

# नारी शक्ति का बहुआयामी दस्तावेज: 'महिला सशक्तिकरण' पर एक गंभीर विमर्श

समावेशी विकास और सशक्त राष्ट्र-निर्माण के वर्तमान वैश्विक विमर्श में नारी सशक्तिकरण अब केवल सामाजिक बहस का विषय नहीं, बल्कि नीति-निर्माण और लोकतांत्रिक सुदृढ़ता का केंद्रीय आधार बन चुका है। इसी व्यापक और समकालीन दृष्टि को केंद्र में रखकर एडिशन पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित डॉ. संजय कुमार राय, सोनी राय की पुस्तक 'महिला सशक्तिकरण: सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आयाम' एक गंभीर, शोधपरक और विश्लेषणात्मक कृति के रूप में सामने आती है।

यह पुस्तक महिला सशक्तिकरण के बहुआयामी स्वरूप को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से लेकर आधुनिक संवैधानिक प्रावधानों, नीतिगत सुधारों और वैश्विक परिदृश्य तक क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करती है। लेखकों ने स्पष्ट किया है कि सशक्तिकरण केवल अधिकारों की समानता तक सीमित अवधारणा नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता, आर्थिक प्रगति और लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती की अनिवार्य शर्त है।

महिला सशक्तिकरण: सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आयाम में शिक्षा को सशक्तिकरण की आधारशिला माना गया है। डॉ. संजय कुमार राय के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा न केवल आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि निर्णय क्षमता और नेतृत्व कौशल का विकास भी करती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता को महिलाओं की गरिमा और सामाजिक सम्मान से जोड़ा गया है, वहीं राजनीतिक सहभागिता को लोकतंत्र की वास्तविक सफलता का मानदंड बताया गया है। पुस्तक यह स्थापित करती है कि निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की समान भागीदारी के बिना लोकतांत्रिक ढांचा अधूरा है।

स्वास्थ्य अधिकार, कानूनी जागरूकता और डिजिटल सशक्तिकरण जैसे समकालीन आयामों को भी विस्तार से विश्लेषित किया गया है। विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित वर्ग की महिलाओं के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ—अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक रूढ़ियाँ—पुस्तक को जमीनी यथार्थ से जोड़ती हैं। लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए केवल नीतियाँ पर्याप्त नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और सामुदायिक सहभागिता भी आवश्यक है।

डॉ. संजय कुमार राय, जो एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद्, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ और रणनीतिक नवोन्मेषक हैं, अपने तकनीकी अनुभव और शोधपरक दृष्टिकोण के माध्यम से विषय को विश्लेषणात्मक गहराई प्रदान करते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल रूपांतरण और उभरती प्रौद्योगिकियों में दो दशकों से अधिक का अनुभव उनके तर्कों को ठोस आधार देता है। वहीं, सोनी राय की पत्रकारिता पृष्ठभूमि और सामाजिक संवेदनशीलता पुस्तक में मानवीय आयाम जोड़ती है। शिक्षा, स्वास्थ्य और सामुदायिक विकास के क्षेत्र में उनके अनुभव से पुस्तक का कथ्य अधिक जीवंत और व्यावहारिक बनता है। पिछले 15 वर्षों से अफ्रीका में सक्रिय सामाजिक पहलों से जुड़ी सोनी राय ने वंचित समुदायों के साथ कार्य करते हुए जो अनुभव अर्जित किए हैं, वे पुस्तक की दृष्टि को वैश्विक संदर्भ प्रदान करते हैं। इस प्रकार यह कृति केवल सैद्धांतिक विमर्श तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वास्तविक सामाजिक परिदृश्य से संवाद स्थापित करती है।

शैली की दृष्टि से पुस्तक सरल, सुव्यवस्थित और तथ्याधारित है। शोधपरक संदर्भों और विश्लेषणात्मक प्रस्तुति के कारण यह अकादमिक जगत, नीति-निर्माताओं, शोधार्थियों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होती है। साथ ही, यह सामान्य पाठकों को भी महिला सशक्तिकरण की जटिलताओं और संभावनाओं से परिचित कराती है। समग्र रूप में 'महिला सशक्तिकरण: सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आयाम' समानता, गरिमा और न्याय पर आधारित समाज की स्थापना की दिशा में एक विचारोत्तेजक दस्तावेज है। यह पुस्तक न केवल विमर्श को समृद्ध करती है, बल्कि पाठकों को सक्रिय सामाजिक भागीदारी के लिए प्रेरित भी करती है।

**उमेश कुमार सिंह**
**एवी के न्यूज सर्विस**

# सकल जैन समाज के महावीर धनोप्या निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए

*बूंदी सकल जैन समाज के दिवार्षिक चुनाव में महावीर धनोप्या को सर्वसम्मति सेनिर्विरोध अध्यक्ष तथा आदित्य भंडारी को सचिव के पद पर चुना गया। चुनाव अधिकारी त्रिलोकचंद जैन ने बताया कि गुरुवार को सकल जैन समाज के निर्विरोध हुए दिवार्षिक चुनाव में महावीर धनोप्या के नाम का प्रस्ताव नवीन गंगवाल ने रखा जिसका समर्थन प्रताप छाजेड ने किया एवं सचिव पद पर आदित्य भंडारी के नाम का प्रस्ताव ओमप्रकाश ठग ने किया जिसका समर्थन विमल भंडारी ने किया और कोई दूसरा नाम नहीं आने पर इन्हें निर्विरोध अध्यक्ष व सचिव के पद पर चुन लिया गया।*

उसके बाद नव निर्वाचित अध्यक्ष महावीर धनोप्या ने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए कार्याध्यक्ष के पद पर ओमप्रकाश बडजात्या कोषाध्यक्ष राम विलास जेन संयुक्त सचिव ओमप्रकाश ठग संरक्षक त्रिलोकचंद जैन संजय जैन तथा सभी समाज के घटकों के अध्यक्ष को उपाध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। उसके उपरांत महावीर धनोप्या की अध्यक्षता में आगामी महावीर जयंती को मनाने तथा समाज में एक जड़ता लाने पर विचार किया गया। मीडिया प्रभारी रविंद्र काला ने बताया कि इस वर्ष की महावीर जयंती के लिए सर्वसम्मति से ओमप्रकाश ठग को संयोजक प्रताप छाजेड को उपसंयोजक इनके सहयोग के लिए नवीन गंगवाल सुनील बाकलीवाल व प्रकाश महात्मा को जिम्मेदारी दी है।

मीटिंग में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस वर्ष सकल जैन समाज के तत्वाधान में भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों पर निबंध प्रतियोगिता तथा उनके जीवन पर सामान्य ज्ञान परीक्षा प्रतियोगिता कराई जाएगी जिसका उप संयोजक धर्मेंद्र जैन को बनाया गया है।

महावीर जयंती को विशाल एवं विस्तृत रूप से मनाए जाने पर नागदी बाजार बघेरवाल के अध्यक्ष महावीर हरसोरा अनूप जैन ने तथा फनी भूषण सुरलाया ने अपने विचार रखें तथा अंत में अपनी मधुर वाणी से फनी भूषण सुरलाया ने भगवान महावीर स्वामी पर सत्ता भजन गाकर सबको मंत्र मुक्त कर दिया एवं नवनियुक्त अध्यक्ष के सम्मान में गीत सुनाकर बहुत प्रसन्नता का माहौल कर दिया।

# रोहिताश कुमार को नेपाल की संस्था द्वारा 'मातृभाषा रत्न' मानद उपाधि सम्मान



***दिल्ली के शिक्षक /साहित्यकार रोहिताश कुमार उर्फ रोहित रोज को उनकी सृजनात्मक साधना, दीर्घकालीन शैक्षणिक सेवाओं तथा साहित्यिक योगदान के लिए मातृभाषा रत्न अंतरराष्ट्रीय मानद उपाधि से अलंकृत किया गया है।***

यह सम्मान अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के पावन अवसर पर काठमांडू (नेपाल) स्थित प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन द्वारा प्रदान किया गया। उक्त संस्था का मूल उद्देश्य भारत-नेपाल के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संबंधों को और अधिक सुदृढ़ करना, देवनागरी लिपि के संरक्षण एवं संवर्धन को प्रोत्साहित करना तथा हिंदी-नेपाली जैसी मैत्री भाषाओं के वैश्विक प्रसार के माध्यम से देश-विदेश के साहित्यकारों एवं शिक्षकों को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करना है। रोहित रोज को लगभग पच्चीस वर्षों की अनवरत शिक्षण सेवा, राष्ट्रीय स्तर पर विविध साहित्यिक मंचों पर सक्रिय सहभागिता, तथा आकाशवाणी दिल्ली एवं दूरदर्शन पर काव्य-पाठ सहित साहित्यिक अवदान के लिए प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।